विचार प्रवाह

जब हमें यह ज्ञात है कि बिना कुछ किए आध्यात्मिक तथा भौतिक प्रगति अत्यंत कठिन है, तो प्रमाद में पड़कर निर्मूल स्थिति में अपना जीवन व्यर्थ, शक्तिहीन,दिशाहीन व उद्देश्यहीन कर देना किसी भी प्रकार से एक चैतन्य प्रकृति के व्यक्ति के लिए उचित नहीं है।

जय श्री कृष्ण

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ा : 17 अंक : 32 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 02 अक्टूबर से 08 अक्टूबर, 2025 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

जल्द शुरू होने वाले हैं 4 नए स्टेशन
मुंबई के आसपास रहनेवालों को मिलेगी राहत

मुंबई। मुंबई और उसके आसपास के इलाकों के लिए एक बड़ी खुशखबरी आई है। लंबे इंतजार के बाद मुंबई मेट्रो लाइन 4–4। का ट्रायल रन शुरू हो गया है। इस लाइन पर मेट्रो के शुरू होने का फायदा ठाणे और उसके आसपास रहने वाले लोगों को बड़े पैमाने पर मिलेगा। इससे हर रोज ट्रैफिक जाम में होने वाले समय की बर्बादी से मुक्ति मिलेगी। इस परियोजना का सबसे बड़ा लाभ ठाणेवासियों को मिलने वाला है, क्योंकि यह पहली बार है जब ठाणे सीधे मेट्रो नेटवर्क से जुड़ रहा है। ट्रायल रन फिलहाल गाइमुख से विजय गार्डन तक 4.4 किलोमीटर लंबे हिस्से पर किया जा रहा है। इस स्ट्रीच पर कुल चार स्टेशन बनाए गए है। मुंबई मेट्रो से जुड़े सूत्रों ने बताया कि तकनीकी जांच और मेट्रो संचालन से जुड़ी सभी प्रक्रियाओं का परीक्षण हो रहा है। अधिकारियों के अनुसार, शुरुआती नतीजे बेहद सकारात्मक रहे हैं। अब पूरे प्रोजेक्ट के काम में तेजी लाने पर जोर दिया जा रहा है।

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, पूरी लाइन के तैयार हो जाने के बाद यह लगभग 32 से 35 किलोमीटर लंबी होगी, जिसमें कुल 32 स्टेशन होंगे। यह कॉरिडोर स्वामी समर्थ नगर, विक्रोली और ईस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे (EEH) से होकर गुजरेगा। ऐसे में पूर्वी उपनगरों और मुंबई के व्यावसायिक केंद्रों के बीच आवागमन बेहद आसान हो जाएगा। इस परियोजना का सबसे अहम हिस्सा मोगरपाडा डिपो है। यहां अभी काम चल रहा है। एक बार इस डिपो के तैयार होने से न केवल इस लाइन बल्कि अन्य मेट्रो लाइनों की क्षमता भी बढ़ जाएगी। माना जा रहा है कि इसी साल दिसंबर तक यह लाइन भी शुरू हो जाएगी।

मुंबई और ठाणे के बीच आवागमन होगा आसान

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने इसे थाने के लिए ऐतिहासिक कदम बताया था। मेट्रो के इस रूट पर 4 नए स्टेशन शुरू होने को लेकर स्थानीय लोगों में भारी उत्साह है। लोग मानते हैं कि मेट्रो शुरू

होने के बाद थाने से मुंबई के अन्य हिस्सों तक रोजाना की यात्रा कहीं ज्यादा आसान और आरामदायक हो जाएगी। हर रोज लाखों की संख्या में मुंबई और ठाणे के बीच लोग सफर करते हैं। स्पष्ट है कि ट्रायल रन की शुरुआत के साथ थानेवासियों की उम्मीदें और बढ़ गई हैं। आने वाले समय में यह परियोजना न सिर्फ यात्रा के तौर–तरीके बदलेगी, बल्कि थाने को एक नए विकास पथ पर भी आगे ले जाएगी।

सिलेंडर हुआ महंगा... फेस्टिव सीजन में लगा झटका, दिल्ली से मुंबई तक बढ़ी कीमत

मुंबई। अक्टूबर 2025 की शुरुआत हो चुकी है और ये कई बड़े बदलावों (**1st October Rule Change**) के साथ शुरू हुआ है. महीने की पहली तारीख को ही महंगाई का तगड़ा झटका लगा है. देश में एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में 16 रुपये तक की बढ़ोतरी (**LPG Cylinder Price Hike**) की गई है. ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने दिल्ली से मुंबई तक और कोलकाता से चेन्नई तक एलपीजी के दाम बढ़ाए हैं. हालांकि, ये बढ़ोतरी 19 किलोग्राम वाले कॉमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमतों में की गई है, जबकि 14 किलोग्राम वाले घरेलू एलपीजी सिलेंडर के भाव में कोई चेंज नहीं किया गया है।

दिल्ली में 15, तो मुंबई–चेन्नई में 16 रुपये महंगा

आईओसीएल की वेबसाइट पर अपडेट किए गए एलपीजी सिलेंड प्राइस पर गौर करें, तो राजधानी दिल्ली में एक सिलेंडर की कीमत में 15 रुपये की बढ़ोतरी की गई है. इसके बदलाव के बाद 19 किलो का सिलेंडर अब पहले के 1580 रुपये के बजाय 1595 रुपये का मिलेगा. वहीं कोलकाता की बात करें, तो कॉमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमत 1684 रुपये से बढ़कर 1700 रुपये हो गई है।

अन्य महानगरों की बात करें, मुंबई में अब तक 1531 रुपये का मिलने वाला 19 **KG Cylinder** अब 1547 रुपये का, जबकि चेन्नई में इसके दाम को 1738 रुपये से बढ़ाकर 1754 रुपये कर दिया गया है. दिल्ली के अलावा तीनों शहरों में इसकी कीमत में 16 रुपये की बढ़ोतरी की गई है. ये नई कीमतें 1 अक्टूबर 2025 से लागू कर दी गई है।

मुलुंड में भव्य प्रेरणा रास का आयोजन

मुंबई– पूर्व सांसद मनोज कोटक द्वारा लगातार 18 वें वर्ष कालिदास ओपन ग्राउंड, मुलुंड पर भव्य प्रेरणा रास डांडिया (नवरात्रोत्सव) का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर किरीट सोमय्या (पूर्व सांसद), प्रभाकर शिंदे (पूर्व नगरसेवक), डॉ. बाबूलाल सिंह(वरिष्ठ समाजसेवी),डॉ. सचिन सिंह (अध्यक्ष युवा ब्रिगेड असोसिएशन), समाजसेवक संतोष विश्वकर्मा, मोहित सिंह, एड. शरीफ खान, श्रीमती जयबाला सिंह, श्रीमती बबिता गुप्ता का सम्मान माताजी का अंगवस्त्रम एवं स्मृति चिन्ह देकर मनोज कोटक ने सम्मान किया। डांडिया रास में शरद लस्करी बैंड के कलाकार दिव्या जोशी गणात्रा, नीरव बारोट, भावना गड़ा के सुमधुर गीतों पर रोजाना हजारों युवक युवती रंग बिरंगे परिधानों डांडिया रास में शामिल हो रहे हैं।

"एनटीपीसी टांडा में हिंदी पखवाड़ा–2025 और दशहरा महोत्सवः सांस्कृतिक वैभव और सामुदायिक एकता का संगम"

बस्ती मेरी बस्ती संवाददाता सुनील कुमार शर्मा की रिपोर्ट,टांडा, अम्बेडकर नगर

हिंदी पखवाड़ा–2025 समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 29 सितम्बर 2025 को उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ

हिंदी पखवाड़ा–2025: सांस्कृतिक संध्या और पुरस्कार वितरण

हिंदी पखवाड़ा–2025 का समापन समारोह शाम 7:30 बजे दीप प्रज्वलन के साथ शुरू हुआ, जिसमें कार्यकारी निदेशक जयदेव परिदा, गरिमा महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती संघमित्रा परिदा और सभी महाप्रबंधकों ने भाग लिया। महाप्रबंधक (सतर्कता) एस.सी. सिंह ने सतर्कता के महत्व पर जोर दिया, जबकि राजभाषा प्रभारी वरुण सोनी ने पखवाड़े की प्रतियोगिताओं का विवरण प्रस्तुत किया। अपर महाप्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी) धीरज सक्सेना के ओजस्वी कविता पाठ ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन वरिष्ठ प्रबंधक (रसायन) नीरज रस्तोगी ने किया। एनटीपीसी परिवार, कर्मचारियों, उनके परिजनों और स्थानीय नागरिकों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने इस समारोह को अविस्मरणीय बना दिया।

दशहरा महोत्सवः आस्था, संस्कृति और समृद्धि का उत्सव

एनटीपीसी टांडा का दशहरा महोत्सव आस्था और सांस्कृतिक वैभव का अनोखा संगम रहा। प्रतिदिन आयोजित होने वाली रामलीला, भव्य झांकियाँ,, गरबा, डांडिया और लोकगीतों की प्रस्तुतियाँ मेले की शोभा बढ़ा रही हैं। श्री दुर्गा माता की आकर्षक झाँकी और प्रकाश व्यवस्था ने मेले को और भी दिव्य बना दिया। मेले में झूले, विविध व्यंजनों की दुकानें और माता दुर्गा के दर्शन के लिए लगी कतारें उत्साह का केंद्र रहीं। मेले ने स्थानीय व्यापारियों के लिए रोजगार के अवसर भी सृजित किए। परियोजना प्रमुख जयदेव परिदा ने श्रद्धालुओं से शांति और सुरक्षा बनाए रखने की अपील की। दुर्गा पूजा में गरिमा महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती संघमित्रा परिदा, महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) अजय सिंह यादव, महाप्रबंधक (ईंधन प्रबंधन) राम नारायण त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक (अनुरक्षण) प्रमोद कुमार गोयल, अपर महाप्रबंधक (मा.संसा.) रजनीश कुमार खेतान, यूनियन व एसोसिएशन के पदाधिकारियों और पर्व आयोजन समिति ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इब्राहिमपुर थाना क्षेत्र की एनटीपीसी चौकी प्रभारी मुनि मनरंजन दुबे भारी पुलिस बल के साथ मेले की सुरक्षा सुनिश्चित करते दीखे। जनसंपर्क अधिकारी वरुण सोनी ने बताया कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों और महिलाओं की भागीदारी ने मेले में नई ऊर्जा का संचार किया।

विजयादशमी का इंतजार

आने वाले दिनों में विजयादशमी के अवसर पर रावण वध का भव्य दृश्य मेले को चरम पर ले जाएगा। स्थानीय निवासियों का मानना है कि यह मेला टांडा को एक पारंपरिक पर्यटन स्थल

के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। एनटीपीसी टांडा का यह आयोजन सांस्कृतिक संरक्षण, सामुदायिक एकता और आर्थिक समृद्धि का प्रतीक बन गया है।

पांच दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन का आयोजन हुआ

कार्ययोजना – राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन – 2025 (26 से 30 सितम्बर 2025, शान्तिवन, आबूरोड) प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मीडिया विंग की ओर से मुख्यालय शान्तिवन परिसर, आबूरोड में 5 – दिवसीय (26 से 30 सितम्बर 2025) राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन का आयोजन हुआ । इस आयोजन का विषय – "समाज में शान्ति, एकता और विश्वास को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका" था। इस मीडिया सम्मेलन के विभिन्न विषय इस प्रकार हैं– दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता और ध्यान, आतंरिक 'स्व' की खोज, सर्वोच्च सत्ता की पहचान, राजयोग ध्यान के चमत्कार, सफल जीवन के लिए कर्म दर्शन, जनसंचार में पारदर्शिता और विश्वास, आध्यात्मिक शक्ति से चुनौतियों पर विजय, समाज पर सोशल मीडिया का प्रभाव – नियमन के लिए कदम, नैतिक और जिम्मेदार पत्रकारिता को प्रोत्साहित करना, एकता और विश्वास के सेतु निर्माण में जनसंपर्क की भूमिका, समग्र कल्याण के लिए डिजिटल डिटॉक्स, भविष्य की आदर्श पत्रकारिता के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं सोशल मीडिया अंतरात्मा की आवाज़ एक बेहतर दुनिया के लिए मीडिया–

सम्मेलन में विचार–विमर्श के बाद अनुकरण के लिए कार्ययोजना इस प्रकार है–

1. "विश्व की वर्तमान स्थिति के लिए हम स्वयं ज़िम्मेदार हैं, न कि सर्वोच्च सर्वशक्तिमान सत्ता और इसलिए इसे बदलने के लिए भी हम ही उत्तरदायी हैं। यह परिवर्तन स्वयं को बदलने से शुरू होता है । मीडियाकर्मियों को सलाह दी जाती है या यूँ कहें कि अनुरोध किया जाता है कि वे अपनी रिपोर्टिंग में सटीकता सुनिश्चित करने, फर्जी खबरों से बचने और अन्य मनुष्यों, संस्थाओं और विभिन्न संस्कृतियों की गरिमा का सम्मान करने के लिए सर्वोत्तम संभव प्रयास करें और सटीकता, पारदर्शिता, निष्पक्षता और जवाबदेही के लिए आचार संहिता लागू करें।

2. शांतिपूर्ण और सुखी जीवन लिए सौहार्दपूर्ण और आदर्श संबंध बनाए रखने का लाभ प्राप्त करने हेतु आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से क्रोध, लोभ, वासना आदि जैसी व्यक्तिगत कमजोरियों को दूर करने का प्रयास करें।

3. यह शांति के लिए एकता और विश्वास बनाए रखने का समय है और मीडिया को अपनी सामग्री में सामाजिक, आध्यात्मिक, पर्यावरणीय और मानवीय मुद्दों को स्थान देना चाहिए ।

4. मानव मन की शक्ति को पहचानते हुए, जैसा कि कहावत है, "युद्ध लोगों के मन में शुरू होते हैं", वैसे ही शांति भी लोगों के मन में शुरू होती है। इसलिए मीडियाकर्मियों को ध्यान के अभ्यास पर स्वयं को केंद्रित करना चाहिए जो आंतरिक आत्मा को समृद्ध और सशक्त बनाता है। जो पेशे में उत्कृष्टता और विशेषज्ञता लाता है।

5. तथ्यों की जाँच, गलत सूचनाओं का पता लगाने और विशेष रूप डिजिटल प्लेटफॉर्म पर गोपनीयता की सुरक्षा के लिए एआई जैसी उन्नत तकनीक का उपयोग करना ।

6. ऐसी सामग्री के सह–प्रबंधन में लोगों को शामिल करना, जो वास्तविक आवाज़ और समाधानों को प्रतिबिंबित करती हो। पहुँच, भावनात्मक सम्बन्ध और सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन पर मीडिया नज़र रखें। जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण के लिए स्थानीय रेडियो पॉडकास्ट और नागरिक पत्रकारिता को मज़बूत बनाएँ।

जन जागृति सेवा संस्था द्वारा मुलुंड में नवरात्रोत्सव का आयोजन

मुंबई– जन जागृति सेवा संस्था द्वारा अमर नगर,मुलुंड में नवरात्रोत्सव का आयोजन धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर आयोजित माताजी की चौकी में सुप्रसिद्ध गायिका प्रिया मिश्रा और उनकी टीम ने सभी का भरपूर मनोरंजन किया। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. बाबूलाल सिंह, समाजवादी पार्टी के महासचिव रमाशंकर तिवारी,डॉ. सचिन सिंह,अनिरुद्ध दुबे प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। माताजी की चौकी में भाई जगताप (विधायक), चरण सिंह सप्रा(कार्याध्यक्ष –मुंबई कांग्रेस), सचिव–किशोर मुंडेकल, शिवसेना युवा नेता राजोल संजय पाटील, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष विट्ठल सातपुते, राकेश राघवन, समाजसेवी शिवा सिंह उपस्थित रहे। आयोजक सुखराम शुक्ला (संस्थापक अध्यक्ष), मुकेश दुबे (उपाध्यक्ष), भरत चौबे (सचिव) अजय राय (कोषाध्यक्ष)ने अतिथियों का शाल, पुष्पगुच्छ, प्रसाद प्रदान कर सत्कार किया। नवरात्रोत्सव के सफल आयोजन में अखिलेश मिश्रा, मनीष ठक्कर, कृष्णा पाण्डेय, सुनील मंडल, सूरज शुक्ला, हरिओम तिवारी, विजय जाधव, दिव्यांश दुबे, अर्जुन सिंह, विकास सिंह का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

किसी की मृत्यु हो जाये तो उसकी सद्गति हेतु करें यह उपाय

जब शरीर को संस्कार के लिए ले जायें तो चिता में एक रूद्राक्ष का मोती जरूर डालें, ताकि जो जीव गया उसपर कोई प्रेत आत्मा ना आये। श्रीमद् भगवत गीता के सातवें अध्याय का पाठ करें स और उसका पुण्य मृतक की प्रगति के लिए अर्पण करें। घर में अगर अस्थियाँ लाते हो तो उसको थोड़े समय के लिए आंवले के रस में रख दे, उसके बाद ब्राह्मण द्वारा विधि करा कर गंगा में प्रवाह कर दे । 13 दिनों तक सुबह– सुबह दो मिट्टी के बर्तन लें, एक में कच्चा दूध और दूसरे में पानी डालकर मृतक के निमित्त छत पर रख दें और दूसरे दिन बचे हुए दूध और पीना को पीपल के पेड़ मे डाल दे । संध्या के समय तुलसी के पौधे के करीब, एक घी का दिया जला दे और कोई सुहागन स्त्री तुलसी के ऊपर इस तरह से जल डाले कि जलता हुआ दिया, पानी की छीटों से बुझ जाये।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : संगठित, अनुशासित और आत्मविश्वासी भारत का प्रतीक

(पवन वर्मा–विनायक फीचर्स)

वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा नागपुर में स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज अपने 100 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। भारत के आधुनिक इतिहास में यदि किसी संगठन ने सामाजिक राष्ट्रीय जीवन को गहराई तक प्रभावित किया है, तो वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ही है। विजयादशमी का पर्व, परंपरागत रूप से सत्य की विजय, अनुशासन और पराक्रम का प्रतीक माना जाता है और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने इसे अपने अस्तित्व और दर्शन के आधार रुप में स्वीकार किया है। इस वर्ष की विजयादशमी संघ की शताब्दी यात्रा के इतिहास और भविष्य दोनों का दर्पण है।

स्थापना का इतिहास

बीसवीं शताब्दी का भारत गहन संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। अंग्रेजी दासता, सामाजिक विखंडन, सांप्रदायिक मतभेद और परंपरागत हीनभावना से ग्रस्त समाज को एक संगठित, अनुशासित और आत्मविश्वासी राष्ट्रत्व की आवश्यकता थी। डॉ. हेडगेवार ने इस आवश्यकता को पहचाना और 1925 में विजयादशमी (दशहरा) को कुछ स्वयंसेवकों के साथ संघ की नींव रखी। उनका विश्वास था कि स्वतंत्र भारत तभी टिकाऊ और सशक्त होगा, जब उसके पास चरित्रवान, अनुशासित और राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत नागरिकों का संगठन होगा। संभवतः इसी दृष्टि से संघ की स्थापना का दिन विजयादशमी चुना गया । एक ऐसा पर्व जो बुराई पर अच्छाई की विजय और सामाजिक एकजुटता का प्रतीक है।

संघ की शाखा और अनुशासन

संघ की सबसे बड़ी विशेषता उसकी शाखा प्रणाली है। प्रतिदिन मैदान में लगने वाली शाखाएँ केवल शारीरिक व्यायाम का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रशिक्षण, अनुशासन निर्माण और राष्ट्रभावना के जागरण का साधन हैं। शाखा में प्रार्थना, खेल, गीत, बौद्धिक चर्चा और सामूहिक अनुशासन,ये सब मिलकर व्यक्ति को निजी अहंकार से मुक्त कर समाज के लिए जीने की प्रेरणा देते हैं।

विजयादशमी और संघ का संबंध

संघ के लिए विजयादशमी केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि उसकी आत्मा का उत्सव है। हर वर्ष विजयादशमी पर शस्त्र–पूजन और पथ–संचलन का आयोजन होता है। शस्त्रपूजन, जो परंपरा से शक्ति और धर्म की रक्षा का प्रतीक रहा है, संघ में अनुशासन और राष्ट्ररक्षा की भावना से जुड़ता है। विजयादशमी पर संघ के सरसंघचालक का वार्षिक विजयादशमी भाषण संगठन की नीतियों, प्राथमिकताओं और समसामयिक चुनौतियों पर मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस भाषण को केवल संघ ही नहीं, बल्कि पूरे देश में गम्भीरता से सुना जाता है।

सेवा और संगठन का सामंजस्य

शताब्दी वर्ष तक की संघ की यात्रा केवल संगठन के विस्तार की नहीं, बल्कि समाज–सुधार और राष्ट्रनिर्माण की कथा भी है। स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन में भले ही संघ की भागीदारी सीमित रही, लेकिन हजारों स्वयंसेवकों ने व्यक्तिगत रूप से आज़ादी की लड़ाई में योगदान दिया। समाजसेवा के क्षेत्र में संघ ने हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। बाढ़, भूकंप, अकाल या महामारी,हर आपदा में स्वयंसेवकों ने सबसे आगे खड़े होकर कार्य किया। सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भी संघ ने भारतीय संस्कृति, परंपरा और गौरव को नए सिरे से आत्मसात करने का अभियान चलाया। संगठन का विस्तार आज इस रूप में दिखता है कि संघ से प्रेरित 36 से अधिक संगठन विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय हैं, जिनमें शिक्षा, श्रमिक, किसान, विद्यार्थी, महिला, आदिवासी, मीडिया और पर्यावरण सभी शामिल हैं।

दुनिया भर में फैला संघ

आज संघ केवल भारत तक सीमित नहीं रहा। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों तक इसकी शाखाएँ सक्रिय हैं। प्रवासी भारतीय समाज के बीच भारतीय संस्कृति और जीवन–मूल्यों का संवाहक बनकर संघ ने वैश्विक पहचान अर्जित की है।

सांप्रदायिकता और कट्टरता के आरोप

इतना विशाल संगठन होने के कारण संघ आलोचनाओं और विवादों से भी जुड़ा रहा है। उस पर सांप्रदायिकता और कट्टरता के आरोप लगाए जाते रहे हैं। आपातकाल के दौरान संघ पर प्रतिबंध लगा और हजारों स्वयंसेवक जेल गए। वर्तमान समय में भी संघ पर ऐसे आरोप लगाए जाते हैं। फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि संघ की निरंतरता, अनुशासन और सेवा–भावना ने उसकी आलोचनाओं को समय–समय पर मुंहतोड़ जवाब दिया है।

सामर्थ्य और आत्मरक्षा का संदेश

हमारे समाज में विजयादशमी केवल रावण–वध की कथा भर नहीं है। यह अन्याय और अहंकार के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक है। संघ ने इसे अपने संगठन की आत्मा बना दिया। शस्त्र–पूजन से सामर्थ्य और आत्मरक्षा का संदेश निकलता है। पथ–संचलन से एकता और अनुशासन का प्रदर्शन होता है। विजयादशमी भाषण से दिशा और मार्गदर्शन का सूत्र मिलता है। इस प्रकार विजयादशमी और संघ का रिश्ता केवल तिथि या परंपरा का नहीं, बल्कि विचार और दर्शन का रिश्ता है।

संघ के सौ साल का महत्व

100 वर्ष किसी भी संगठन के लिए अनुभव, आत्ममंथन और नए संकल्प का अवसर होते हैं। आज यह प्रश्न है कि आने वाले सौ वर्षों में उसकी दिशा क्या होनी चाहिए। क्या वह केवल संगठन विस्तार तक सीमित रहेगा या समाज में समरसता, न्याय और विकास की ठोस पहल करेगा? क्या वह भारतीय संस्कृति को केवल परंपरा तक बाँध देगा या उसे आधुनिक युग में प्रासंगिक बनाने की भी कोशिश करेगा? संघ के लिए अब सबसे बड़ी चुनौती है समरस समाज का निर्माण, जिसमें जातिवाद और विभाजन की रेखाएँ मिटें। आर्थिक राष्ट्रवाद की दिशा में स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत को जीवन का हिस्सा बनाना उसकी प्राथमिकता होनी चाहिए। पर्यावरण और सतत विकास की दिशा में प्रकृति को पूज्य मानने वाली भारतीय परंपरा को व्यवहार में उतारना भी अनिवार्य है। वैश्विक नेतृत्व की दिशा में भारत को विश्वगुरु बनाने का सांस्कृतिक और नैतिक प्रयास संघ की अगली यात्रा का आधार होना चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी और विजयादशमी, दोनों ही भारतीय समाज के लिए आत्मचिंतन और आत्मविश्वास का अवसर हैं। विजयादशमी का संदेश है बुराई पर अच्छाई की विजय, असत्य पर सत्य का पराक्रम और समाज की एकजुटता से राष्ट्र की शक्ति। संघ यदि आने वाले सौ वर्षों में इस संदेश को और अधिक समावेशी, प्रगतिशील और सार्वभौमिक रूप में समाज तक पहुँचा पाए, तो यह केवल एक संगठन की उपलब्धि नहीं होगी, बल्कि भारत की आत्मा का पुनर्जागरण कहलाएगा।

(विनायक फीचर्स)

बड़ों–की–गलती

–अगर कोई बच्चा गलती करता है तो उसका परिणाम कुछ खास नहीं होता सिवाय उसके स्वयं के रोने के।

–अगर पिता गलती करता है तो परिणाम पूरे परिवार को भुगतने पड़ते हैं। परिवार रोता है और लंबे समय तक उसके असर बने रहते हैं।

–धर्मगुरु गलती करते हैं तो परिणाम समाज को भुगतने पड़ते हैं और समाज सैकड़ों वर्षों तक रोता है।

–लेकिन अगर नेता या राजा गलती करता है तो परिणाम पूरे राष्ट्र को भुगतने पड़ते हैं और वह भी सहस्त्रों वर्षों तक।

–सरदार पटेल ने नेहरू के पक्ष में गद्दी छोड़कर बहुत बड़ी भूल की थी जिसके परिणाम हम अब तक भुगत रहे हैं।

–शास्त्री जी ने युद्ध जीतकर भी अयूब को सस्ते में छोड़ देने की बहुत बड़ी भूल की।

–इंदिरा गाँधी ने भिंडरावाले को खुला छोड़कर बहुत बड़ी भूल की।

–राजीव गांधी ने लिट्टे को खुला छोड़कर बहुत बड़ी भूल की थी।

अब लगता है कि अपनी लोकतान्त्रिक प्रतिबद्धता के चलते ऐसी ही एक भूल नरेन्द्र मोदी जी कर रहे हैं जो कहीं भारत को भारी न पड़ जाये।

वह इस विदेशी खून के मूर्ख राहुल गांधी को निरंतर छोड़ते जाने की भूल कर रहे हैं जो कहीं आत्मघाती भूल साबित न हो जाये क्यों कि चीन व सोरोस के सहयोग से अगर यह सत्ता में आया तो देश में खुला इस्लामी राज लेकर आयेगा।

इस व्यक्ति को हिंदुओं, हिंदू धर्म और हिंदू संस्कृति से मुस्लिमों की ही तरह घोर घृणा है।

विदेशी रक्त का यह आदमी भारत को आग, खून और आंसुओं में डूबा देखना चाहता है।

मोदीजी इसको बार बार छोड़कर पृथ्वीराज चौहान वाली गलती तो नहीं दुहरा रहे?

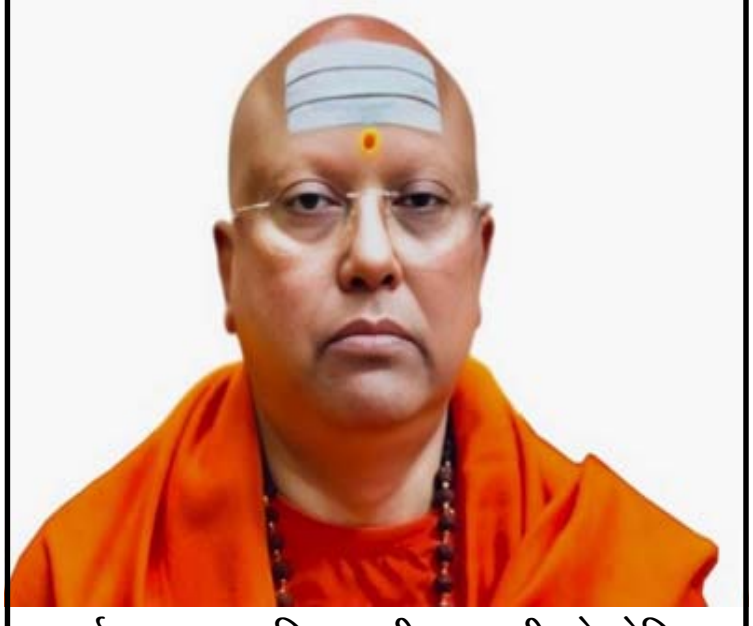

जुर्म का रास्ता कितना ही मखमली हो लेकिन खत्म जेल के कंबल में ही होता है।

मुकेश कुमार कश्यप

संपादक

न सत्ता पक्ष न विपक्ष सिर्फ जनपक्ष

सम्पादकीय...

वैश्विक वर्चस्व की कुंजी ऊर्जा नीतियां

आज की दुनिया में ऊर्जा नीतियां सिर्फ आर्थिक निर्णय नहीं हैं, बल्कि वैश्विक वर्चस्व की कुंजी हैं। जब अमेरिका तेल और गैस पर दांव लगा कर पुरानी राह पर लौट रहा है, वहीं चीन स्वच्छ ऊर्जा क्रांति को गति दे रहा है। यह विरोधाभास न केवल आर्थिक असंतुलन पैदा कर रहा है, बल्कि भविष्य की तकनीकी दिग्गजों—जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)—के लिए बुनियादी ढांचे को भी प्रभावित कर रहा है। साइरस जेन्सेन की हालिया वीडियो 'अमेरिका जस्ट मेड द ग्रेटेस्ट मिस्टेक ऑफ द 21वीं सेंचुरीच इस मुद्दे को बेबाकी से उजागर करती है। अमेरिका, जो कभी नवाचार का प्रतीक था, अब अपनी ऊर्जा नीतियों में उल्टा चढ़ाव दिखा रहा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में, अमेरिका ने अलास्का में 44 अरब डॉलर का प्राकृतिक गैस प्रोजेक्ट शुरू किया था। जनरल मोटर्स जैसी कंपनियां इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की योजनाओं को रद्द कर रही हैं, और वी8 गैस इंजनों पर लौट रही हैं। यहां तक कि ईवी खरीद पर टैक्स क्रेडिट भी समाप्त कर दिए गए हैं। यह सब तब हो रहा है, जब दुनिया जलवायु परिवर्तन से जूझ रही है, और नवीकरणीय ऊर्जा ही भविष्य का रास्ता दिख रही है। जेन्सेन की वीडियो में साफ कहा गया है कि अमेरिका की यह रणनीति अल्पकालिक लाभ के लिए है। तेल और गैस निर्यात बढ़ाने से तत्काल आर्थिक फायदा तो मिलेगा, लेकिन लंबे समय में यह वैश्विक बाजारों में पीछे धकेल देगा। अमेरिका ने 1950 के दशक में सोलर पैनल विकसित किए थे, 1970 के दशक में लिथियम—आयन बैटरी का आविष्कार किया, लेकिन रोनाल्ड रीगन जैसे नेताओं ने जिमी कार्टर के व्हाइट हाउस सोलर पैनल हटाकर इसकी उपेक्षा की। आज भी वही पुरानी सोच हावी है। परिणामस्वरूप, अमेरिका ईवी निर्यात में मात्र 12 अरब डॉलर और बैटरी निर्यात में 3 अरब डॉलर पर सिमट गया है, जबकि सोलर पैनल निर्यात तो महज 69 मिलियन डॉलर का है। यह भूल सिर्फ आर्थिक नहीं, भू—राजनीतिक भी है। वैश्विक दक्षिण—जो सौर और पवन ऊर्जा के 70 प्रतिशत स्रेतों और महत्त्वपूर्ण खनिजों के 50 प्रतिशत का नियंत्रण रखता है—अब नवीकरणीय ऊर्जा की ओर मुड़ रहा है। अमेरिका का जीवाश्म ईंधन पर फोकस इन देशों को अलग—थलग कर देगा जबकि चीन इनके साथ साझेदारी कर रहा है। वहीं, चीन ने स्वच्छ ऊर्जा को राष्ट्रीय प्राथमिकता बना लिया है। 2024 में चीन ने दुनिया के बाकी देशों से ज्यादा विंड टर्बाइन और सोलर पैनल लगाए। ईवी और बैटरी स्टोरेज में निवेश ने इसे वैश्विक नेता बना दिया है। पिछले साल चीन ने 38 अरब डॉलर के ईवी निर्यात किए, 65 अरब डॉलर की बैटरी बेचीं, और सोलर पैनल के 40 अरब डॉलर के निर्यात किए। स्वच्छ ऊर्जा पेटेंट में चीन के पास 7 लाख से ज्यादा हैं, जो दुनिया के आधे से अधिक हैं। जेन्सेन उद्धृत करते हुए बताते हैं कि चीन की सफलता का राज समन्वित प्रयास है। सीएल के सह—अध्यक्ष शिएन पैन कहते हैं, 'चीन को लंबे लक्ष्य पर प्रतिबद्ध करना मुश्किल है, लेकिन जब हम प्रतिबद्ध होते हैं, तो समाज के हर पहलू—सरकार, नीति, निजी क्षेत्र, इंजीनियरिंग—सभी एक ही लक्ष्य की ओर कड़ी मेहनत करते हैं।य यह दृष्टिकोण अमेरिका की छिटपुट नीतियों से बिल्कुल अलग है। चीन अब वैश्विक बाजारों में फैल रहा है। ब्राजील, थाईलैंड, मोरक्को और हंगरी में ईवी और बैटरी फैक्टरियां बना रहा है। हंगरी में 8 अरब डॉलर का कारखाना, इंडोनेशिया में 11 अरब डॉलर का सोलर प्लांट—ये निवेश न केवल आर्थिक, बल्कि भू—राजनीतिक लाभ भी दे रहे हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स के हवाले से जेन्सेन कहते हैं, 'ईवी बैटरी बनाने वाले देश दशकों तक आर्थिक और भू—राजनीतिक फायदे काटेंगे। अभी तक का एकमात्र विजेता चीन है।य पिछले 15 वर्षों में चीन ने बिजली उत्पादन में अमेरिका को पीछे छोड़ दिया है। यह आंकड़ा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि एआई जैसी उभरती तकनीकें बिजली पर निर्भर हैं। चीन का स्वच्छ ऊर्जा निवेश न केवल पर्यावरण बचाएगा, बल्कि एआई क्रांति में भी नेतृत्व देगा। आरएमआई की 'पावरिंग अप द ग्लोबल साउथ्य रिपोर्ट बताती है कि वैश्विक दक्षिण के 70 प्रतिशत सौर—पवन संसाधन चीन की रणनीति से जुड़ रहे हैं। यह संघर्ष सिर्फ दो महाशक्तियों का नहीं, बल्कि पूरी दुनिया का है। वैश्विक दक्षिण—अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, दक्षिण एशिया—अब सस्ती और सतत ऊर्जा की तलाश में है। चीन ने इन देशों में सस्ते सोलर पैनल और ईवी तकनीक पहुंचाई है, जबकि अमेरिका के महंगे गैस प्रोजेक्ट इनके लिए बोझ साबित हो रहे हैं। परिणाम? ये देश चीन की ओर झुक रहे हैं। भारत के संदर्भ में देखें तो यह चेतावनी स्पष्ट है। हमारी 'मेक इन इंडियाय और 'प्लेड्ज फॉर क्लाइमेट्य पहलें स्वच्छ ऊर्जा पर केंद्रित हैं, लेकिन चीन का वर्चस्व चुनौती है। भारत सोलर और विंड में प्रगति कर रहा है, लेकिन बैटरी और ईवी चिप्स में आयात पर निर्भरता बनी हुई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक पेशेवर कर्मयोगी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की करिश्माई उपस्थिति और संगठनात्मक नेतृत्व की भरपूर प्रशंसा की गई है। उनके काम की विशेषता उनकी कठोर व्यावसायिकता है, जिसे कम ही लोग जानते और समझते हैं। गुजरात के मुख्यमंत्री और भारत के प्रधानमंत्री के रूप में पिछले ढाई दशकों में उनकी एक अथक पेशेवर कार्यशैली विकसित हुई है। जो चीज़ उन्हें अलग बनाती है, वह है दिखावे की प्रतिभा नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुशासन जो दृष्टि को टिकाऊ व्यवस्थाओं में बदल देता है। भारतीय मुहावरे में, वे एक कर्मयोगी हैं: कर्तव्य पर आधारित कर्म, जो ज़मीनी स्तर पर बदलाव से मापा जाता है। इस साल लाल किले से उनके स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में यही नीति थी। इस भाषण में उपलब्धियों का लेखा—जोखा कम और साझा कार्य का एक चार्टर ज़्यादा पेश किया गयाः नागरिकों, वैज्ञानिकों, स्टार्टअप्स और राज्यों को विकसित भारत के सह—लेखक के रूप में आमंत्रित किया गया। गहन तकनीक, स्वच्छ विकास और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं की महत्वाकांक्षाओं को व्यावहारिक कार्यक्रमों के रूप में प्रस्तुत किया गया, न कि केवल दिखावटीपन के रूप में, और जनभागीदारी, एक मंच निर्माण करने वाले राज्य और उद्यमी लोगों के बीच साझेदारी, को एक पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया गया।

जीएसटी ढांचे का हालिया सरलीकरण इसी पद्धति को दर्शाता है। स्लैब को कम करके और टकराव के बिंदुओं को दूर करके, परिषद ने छोटी फर्मों के लिए अनुपालन लागत कम की है और परिवारों तक लाभ पहुँचाने में तेज़ी लाई है। प्रधानमंत्री का ध्यान अमूर्त राजस्व वक्रों पर नहीं, बल्कि इस बात पर था कि क्या आम नागरिक या छोटा व्यापारी इस बदलाव को जल्दी महसूस कर पाएगा। यह प्रवृत्ति उस सहकारी संघवाद की प्रतिध्वनि है जिसने जीएसटी परिषद का मार्गदर्शन किया है: राज्य और केंद्र गहन विचार—विमर्श करते हैं, लेकिन सभी एक ऐसी प्रणाली के भीतर काम करते हैं जो स्थिर रहने के बजाय परिस्थितियों के अनुकूल हो जाती है। नीति को एक जीवंत साधन के रूप में माना जाता है, जो अर्थव्यवस्था की लय के अनुरूप है, न कि कागज़ पर समरूपता के लिए संरक्षित एक स्मारक के रूप में। यह वह व्यावसायिकता ही है जिसके कारण वह अमेरिका से देर रात 15 घंटे की विदेश यात्रा के बाद निर्माणाधीन नई संसद भवन के गेट पर बिना किसी सूचना के पहुंचे। मैंने हाल ही में प्रधानमंत्री से पंद्रह मिनट का समय माँगा था और मैं उनकी चर्चा में आई व्यापक गहराई और बहुआयामी दायरे से प्रभावित हुआकृसूक्ष्म विवरण और व्यापक संबंध एक ही फ्रेम में समाहित। यह बैठक पैंतालीस मिनट की हो गई। बाद में सहकर्मियों ने मुझे बताया कि उन्होंने तैयारी में दो घंटे से ज़्यादा समय बिताया, नोट्स, आँकड़े और प्रतिवाद पढ़े। होमवर्क का यह स्तर कोई अपवाद नहीं है; यह वह कार्य—मानदंड है जो उन्होंने अपने लिए निर्धारित किया है और व्यवस्था से अपेक्षाएँ रखते हैं। निरंतर तैयारी की यही आदत सुनिश्चित करती है कि निर्णय ठोस और भविष्य के लिए उपयुक्त हों।

भारत की हालिया प्रगति का अधिकांश हिस्सा उन पाइपलाइनों और प्रणालियों पर आधारित है जिन्हें हमारे नागरिकों की गरिमा सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। डिजिटल पहचान, सार्वभौमिक बैंक खाते और रीयल—टाइम भुगतान की तिकड़ी ने समावेशन को बुनियादी ढाँचे में बदल दिया है। लाभ सीधे सत्यापित नागरिकों तक पहुँचते हैं; लीकेज डिज़ाइन के अनुसार कम हो जाते हैं; छोटे व्यवसायों को अनुमानित नकदी प्रवाह मिलता है; और नीतियाँ किस्से—कहानियों के बजाय आँकड़ों पर आधारित होती हैं। अंत्योदय — अंतिम नागरिक का उत्थान — इस प्रकार एक नारा नहीं, बल्कि एक मानक बन जाता है — और प्रधानमंत्री कार्यालय तक पहुँचने वाली प्रत्येक योजना, कार्यक्रम और फ़ाइल का असली लिटमस टेस्ट बना रहता है। मुझे असम के नुमालीगढ़ में भारत के पहले बांस आधारित 2जी इथेनॉल संयंत्र के शुभारंभ के दौरान एक बार फिर इसका गवाह बनने का सौभाग्य मिला। इंजीनियरों, किसानों और तकनीकी विशेषज्ञों के साथ खड़े होकर, प्रधानमंत्री के प्रश्न सीधे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर गएः किसानों को भुगतान उसी दिन कैसे प्राप्त होगा; क्या आनुवंशिक इंजीनियरिंग से ऐसा बांस तैयार किया जा सकता है जो तेज़ी से बढ़ता है और गांठों के बीच बांस के तने की लंबाई बढ़ाता है; क्या महत्वपूर्ण एंजाइमों का स्वदेशीकरण किया जा सकता है; क्या बांस के हर घटककृतना, पत्ती, अवशेषकृका इथेनॉल से लेकर फुरफुरल और ग्रीन एसिटिक एसिड तक, आर्थिक उपयोग किया जा रहा है? चर्चा केवल तकनीक तक ही सीमित नहीं थी।

यह रसद, आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन और वैश्विक कार्बन फुटप्रिंट तक विस्तृत हुई। अंतर्राष्ट्रीय वार्ताओं में भाग लेने वाले व्यक्ति के रूप में, मैंने तुरंत इस पद्धति को पहचान लियाः संक्षिप्त विवरण की स्पष्टता, विवरण में सटीकता और इस बात पर ज़ोर कि श्रृंखला में अंतिम व्यक्ति को पहला लाभार्थी होना चाहिए।

चिता पेटली स्वप्नांची

(अष्टाक्षरी काव्य रचना)

जीवघेणी अतिवृष्टी,
कशी बदलली सृष्टी.
ऊरी दु:खांचा डोंगर,
स्तब्ध पाहतेय दृष्टी.

पिके बहरूनी जाता,
स्वप्ने तिथे फुललेली.
कसे भंगले सारेच ,
होती माती सरलेली.

काय करावे कळेना?
सारा हिशोब चुकला.
फेरा नियतीचा कसा,
बघा काळाने फेकला.

अश्रू बापाच्या डोळ्यात,
उभा संसार पुढ्यात .
धीर खचूनी सरला ,
दोर पडला गळ्यात .

झाली अनाथ लेकरं,
टाहो मायेनं फोडला.
सत्ता बहिरी आंधळी,
छळ दैवाने मांडला .

जीवघेणी अतिवृष्टी,
जीव झाला दु:खी कष्टी.
चिता पेटली स्वप्नांची,
स्तब्ध पाहतेय दृष्टी — —

प्रा.गायकवाड विलास.
मिलिंद महाविद्यालय लातूर.
महाराष्ट्र

आज भी प्रासंगिक तथा अनुकरणीय है लाल बहादुर शास्त्री की सादगी और ईमानदारी

(विवेक रंजन श्रीवास्तव– विनायक फीचर्स)

लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन उनकी सादगी, ईमानदारी और दृढ़ सिद्धांतों के लिए याद किया जाता है। आज राजनीति में सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी तलाशना कठिन हो चला है। शास्त्री जी के व्यक्तित्व के अनेक अनछुए पहलू हैं , किंतु व्यक्तिगत रूप से तथा सार्वजनिक स्तर पर सदैव ईमानदारी उनकी महान चरित्र–शक्ति थी। जो आज खासतौर पर प्रासंगिक तथा अनुकरणीय है।शास्त्री जी का निजी जीवन उनके सिद्धांतों का स्पष्ट प्रतिबिंब था। वे न केवल सार्वजनिक जीवन में बल्कि व्यक्तिगत रिश्तों में भी ईमानदारी और नियमों का पालन करते थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब शास्त्री जी जेल में थे, तो उनकी पत्नी ललिता देवी उनसे मिलने आईं और अपनी साड़ी के पल्लू में दो आम छिपाकर लाईं। यह जानकर शास्त्री जी इतना नाराज हुए कि उन्होंने जेल के नियमों का उल्लंघन करने के विरोध में अपनी ही पत्नी के खिलाफ धरना दे दिया। उनका तर्क था कि एक कैदी का इस तरह बाहर का सामान लेना कानून का अपमान है । जेल में बंदी रहने के दौरान उनकी बेटी गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। उन्हें 15 दिन की पैरोल पर रिहा किया गया, लेकिन दुर्भाग्यवश उससे पहले ही उनकी बेटी का निधन हो गया। इस गहन दुख की घड़ी में भी शास्त्री जी निर्धारित समय से पहले ही स्वेच्छा से जेल वापस लौट गए ।

अपने विवाह में उन्होंने दहेज के रूप में एक चरखा और हाथ से बुने कुछ मीटर कपड़े ही स्वीकार किए थे, जो उस समय की प्रचलित सामाजिक प्रथाओं के बिल्कुल विरुद्ध एक सशक्त उदाहरण था।

प्रधानमंत्री जैसे उच्च पद पर रहते हुए भी शास्त्री जी ने कभी भी सरकारी संसाधनों का व्यक्तिगत उपयोग नहीं किया और अपनी ईमानदारी के लिए एक उच्च मिसाल कायम की। प्रधानमंत्री बनने के बाद भी शास्त्री जी के पास अपनी खुद की कार नहीं थी। परिवार के आग्रह पर उन्होंने एक फिएट कार खरीदने का फैसला किया। उनके पास पूरी राशि नहीं थी, इसलिए उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक से ₹5,000 का कर्ज लिया। दुर्भाग्यवश, कर्ज चुकाने से पहले ही उनका निधन हो गया। उनकी पत्नी ललिता देवी ने सरकार द्वारा कर्ज माफ करने के प्रस्ताव को ठुकराते हुए, अपनी पेंशन से चार साल में यह कर्ज चुका दिया ।

एक बार जब उन्हें पता चला कि उनके बेटे की नौकरी में अनुचित तरीके से पदोन्नति हुई है, तो वे बहुत नाराज हुए और उन्होंने तुरंत उस पदोन्नति को रद्द करने का आदेश दिया । एक बार उनके पुत्र ने किसी निजी काम के लिए उनकी सरकारी कार का इस्तेमाल किया। इस पर शास्त्री जी ने न केवल ड्राइवर से पूछताछ करके उस यात्रा का हिसाब लगवाया, बल्कि यह निर्देश भी दिया कि उस यात्रा का पूरा खर्च उनके निजी खर्चे से सरकारी कोष में जमा कराया जाए ।

शास्त्री जी ने अपने छोटे से कार्यकाल में देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की।1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान देश में भयंकर सूखा और खाद्य संकट पैदा हो गया था। इन चुनौतियों से निपटने के लिए उन्होंने 'जय जवान, जय किसान' का प्रसिद्ध नारा दिया, जिसने सेना और किसानों का मनोबल बढ़ाया । खाद्यान्न संकट को दूर करने के लिए उन्होंने 'हरित क्रांति' को बढ़ावा दिया। साथ ही, दूध का उत्पादन बढ़ाने के लिए 'श्वेत क्रांति' की नींव रखी और 1965 में राष्ट्रीय डेयरी विकास संस्थान का गठन किया, जिसने 'अमूल' जैसी सहकारी समितियों को बढ़ावा दिया ।

खाद्य संकट की घड़ी में उन्होंने देशवासियों से सप्ताह में एक बार एक वक्त का भोजन छोड़ने की अपील की। उन्होंने इसकी शुरुआत अपने परिवार से की, जहाँ सभी ने सिर्फ एक वक्त भोजन करना और बच्चों को शाम को फल व दूध ही देना स्वीकार किया ।

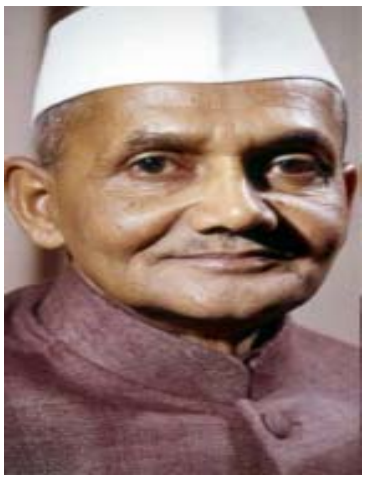

उनकी सादगी केवल जीवनशैली तक सीमित नहीं थी, बल्कि उनके फैसलों में भी दिखाई देती थी। एक बार जब वे गृहमंत्री थे, तो कलकत्ता में यातायात जाम के कारण समय पर एयरपोर्ट नहीं पहुंच पा रहे थे। पुलिस कमिश्नर ने उनके काफिले के आगे सायरन लगी कार भेजने का प्रस्ताव रखा, लेकिन शास्त्री जी ने यह कहकर मना कर दिया कि वे "कोई बड़े आदमी नहीं हैं" । एक बार कपड़े की दुकान पर साड़ियाँ खरीदते समय दुकानदार ने उन्हें मुफ्त में कीमती साड़ियाँ देने की पेशकश की। शास्त्री जी ने न केवल यह पेशकश ठुकरा दी, बल्कि दुकान में मौजूद सबसे सस्ती साड़ियाँ ही खरीदीं और उनकी कीमत अदा करके चले गए । लाल बहादुर शास्त्री जी का पूरा सार्वजनिक जीवन ईमानदारी का अप्रतिम उदाहरण है।

(विनायक फीचर्स)

हनुमान बेनीवाल : नागौर की मिट्टी से उठी तेज़ आवाज़

बेनीवाल चुनौतियों और विवादों के नेता!

सुरेन्द्र चतुर्वेदी

राजस्थान की राजनीति में हनुमान बेनीवाल का नाम अब नया नहीं रहा। नागौर की धरती से निकला यह नेता गाँव–गाँव की पगडंडियों पर चलता है, और मंच पर आकर वही जुबान बोलता है जो लोग सुनना चाहते हैं। शायद यही वजह है कि उन्हें "जनता का आदमी" कहा जाता है।

कल बेनीवाल जी से फ़ोन पर बात हुई। उन्होंने मेरे ब्लॉग्स और आर पार की सराहना की तो लगा कि उनसे अब कई मुद्दों पर बात की जा सकती है। मज़ेदार बात यह हुई कि बेनीवाल ने मुझसे कहा कि आप बाल की खाल निकालने वाले बेबाक पत्रकार हैं और वह चाहेंगे कि मैं उनका साक्षात्कार लूं।

साक्षात्कार तो लूंगा ही मगर फ़िलहाल उनसे हुई फ़ोन वार्ता पर मेरा यह ब्लॉग प्रस्तुत है।

बेनीवाल राज्य के उन ताक़तवर नेताओं में से एक हैं जो ज़मीन से जुड़ी राजनीति करने के लिए जाने पहचाने जाते हैं। बेनीवाल का अंदाज़ साफ़ हैकृ "खुल कर बोलो, बेबाक रहो। किसान और बेरोज़गार युवाओं के मुद्दे पर उनकी आवाज़ सबसे पहले उठती है। त्व्है और ॅ भर्ती में गड़बड़ियों के खिलाफ उनका आंदोलन इसी जज़्बे की झलक है। भीड़ के बीच उनका जोश देखते ही बनता है, जैसे किसी गाँव का बेटा अपने ही लोगों के लिए लड़ रहा हो। कुछ महीने पहले नागौर में एक जनसभा में उन्हें करीब से देखने का मौका मिला। गर्म दोपहरी में भीड़ का जोश और उनका अंदाज़कृदोनों ने हैरान किया। उन्होंने बिना लिखी स्क्रिप्ट के सीधे दिल से बातें कीं। उस वक्त लगा कि यही वो जुड़ाव है जो बड़े–बड़े नेताओं में कम दिखता है। बेनीवाल की चुनौतियाँ कम नहीं और विवाद तो चुनौतियों से भी कहीं ज़्यादा हैं। लेकिन यह सफ़र आसान नहीं। गठबंधन की राजनीति पर अक्सर सवाल उठते हैंकृकभी भाजपा से हाथ मिलाना, कभी अलग हो जाना। कई बार उनके तीखे बयान भी सुर्ख़ियाँ बनते हैं, जैसे हाल में राजपूत समाज को लेकर उठी नाराज़गी। मेरी नज़र में यह उनका सबसे कठिन इम्तिहान है। जनता से जुड़ी बेबाकी बनाए रखते हुए किसी समुदाय की भावनाओं को ठेस न पहुँचे, यह संतुलन साधना आसान नहीं।

आइए उन पर बात करने के साथ ताज़ा घटनाओं पर बात हो जाए।

हाल ही में नागौर हाईवे पर श्रद्धालुओं की बस पर पथराव हुआ तो बेनीवाल तुरंत कार्रवाई की मांग करते दिखे। नागौर में अवैध बजरी खनन पर उनकी तल्ख़ आवाज़ भी चर्चा में रही। उधर ज्योति मिर्धा और डांगा के चुनावी मुकाबले ने नागौर की राजनीति में नया मोड़ ला दिया हैकृजिस पर सबकी नज़र है, और बेनीवाल के लिए भी यह चुनौती कम नहीं।

अब सवाल यह है कि क्या हनुमान बेनीवाल अपनी जनाधार वाली छवि को बनाए रखते हुए पूरे राजस्थान में और मज़बूत पकड़ बना पाएंगेध्या गठबंधन और चुनावी समीकरण उन्हें बार–बार संतुलन साधने पर मजबूर करते रहेंगे मेरी नज़र में बेनीवाल की सबसे बड़ी ताक़त उनका जनता से सीधा रिश्ता है। वे मंच पर उतने ही बिंदास दिखते हैं जितने गाँव की चौपाल में। यही जुड़ाव उन्हें बाकी नेताओं से अलग करता है। लेकिन आने वाले वक्त में उन्हें यह भी साबित करना होगा कि उनका आक्रामक अंदाज़ सिर्फ़ भाषणों तक सीमित नहीं, बल्कि ठोस नतीजों में भी बदल सकता है।

युवक कॉंग्रेस के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का सम्मान

मुंबई। युवक कॉंग्रेस के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का सम्मान समारोह राकेश शेट्टी (प्रवक्ता महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस द्वारा जी एस शेट्टी हॉल, मुलुंड प.पर किया गया। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में मुंबई कांग्रेस के उपाध्यक्ष गोविन्द सिंह, मा. उपाध्यक्ष डॉ. बाबूलाल सिंह, सचिव राजेश इंगले, जिला कांग्रेस कार्याध्यक्ष उत्तम गीते, जिला महिला अध्यक्ष लाजवन्ति शेट्टी,जिला सेवादल अध्यक्ष रमेश विश्वकर्मा,साहब दयाल सिंह उपस्थित रहे। समारोह में मुंबई युवक कांग्रेस के नव निर्वाचित ई.मु.जिला युवक कांग्रेस अध्यक्ष शेखर जगताप,मुंबई युवक कांग्रेस महासचिव मनोज संसारे,विदुर गंगवानी,मुलुंड युवक कांग्रेस अध्यक्ष आदित्य गीते,हिमांशु जोशी (अध्यक्ष वार्ड 103),राकेश पाण्डेय (अध्यक्ष वार्ड 108) का सम्मान अतिथियों द्वारा शाल,पुष्पगुच्छ एवं छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा प्रदान कर किया गया। समारोह में मुलुंड युवक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष डॉ.सचिन सिंह,मोहित सिंह,अरविन्द यादव,कांग्रेस नेता डॉ.आर.एम.पाल,एड.शरीफ खान,संतोष सोनावने,राकेश राघवन,हरीश गुप्ता,नीता जोशी (अध्यक्ष महिला कांग्रेस),संतोष सिंह (अध्यक्ष सेवादल),राजेंद्र उठवाल,करुणा निधि,विट्ठल सातपुते,अब्दुल जब्बार, अलका सावला, कालिंदी सिंघाड़े सहित कई गणमान्य नेताओं ने नव निर्वाचित युवा नेताओं को बधाई प्रदान किया।

करूर हादसे के सबक.....

भीड़ नियंत्रण के लिए ठोस रणनीति बनाना आवश्यक

(मनोज कुमार अग्रवाल –विनायक फीचर्स)

हमारे देश में भीड़ में मची भगदड़ में आम आदमी का दब कुचलकर मरना अब एक परंपरा सी बन गयी है। कुंभ के मेले से लेकर खेल के मैदान, राजनेताओं की सभा, फिल्म सितारों के जश्न, कथावाचकों के पांडालों और धार्मिक आस्था के केंद्र मंदिरों तक बार बार इन घटनाओं की पुनरावृत्ति हो रही है। ऐसी घटनाओं में हर बार आम आदमी ही मारा जाता है। बार बार हो रहे ऐसे हादसों से फिलहाल तो कोई सबक नहीं लिया गया है लेकिन अब समय आ गया है कि भीड़ नियंत्रण के लिए राष्ट्र व्यापी ठोस रणनीति बनायी जाए ।

देश के किसी न किसी हिस्से से कुछ समय के अंतराल पर ऐसी खबरें आती ही रहती है। दुःखद पहलू यह है कि जब भी ऐसी कोई खबर आती है, तो दुःख जताने के साथ जांच कमेटी बैठा दी जाती है। साथ ही मुआवजा देकर मरहम लगाकर लीपापोती कर दी जाती है, लेकिन इससे सबक लेते हुए इसको रोकने के लिए कदम कम ही उठाये जाते हैं। इसी कड़ी में तमिलनाडु के करूर में टीवीके प्रमुख और अभिनेता विजय की रैली के दौरान मची भगदड़ में मृतकों की संख्या बढ़कर 40 हो गई है। स्वास्थ्य सचिव पी सेंथिल कुमार ने बताया 38 शवों की पहचान कर ली गई है और 67 घायलों का उपचार जारी है। इस बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मृतकों और घायलों के परिजनों के लिए मुआवजे की घोषणा कर दी है।

अभिनेता–राजनेता विजय की पार्टी टीवीके ने करूर में हुई रैली में हुई भगदड़ के पीछे डीएमके की साज़िश का आरोप लगाया है। इस भगदड़ में 39 लोग मारे गए और लगभग 100 घायल हुए। टीवीके के वकील अरिवझगन ने बताया है कि पार्टी ने मद्रास उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की है जिसमें अदालत से एक विशेष जांच दल गठित करने या मामले को केंद्रीय एजेंसी सीबीआई को सौंपने का आग्रह किया गया है।

मृतकों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। मृतकों का आकंड़ा बढ़ने की आशंका है। इस साल 2025 में मंदिरों, रेलवे स्टेशन और महाकुंभ में भगदड़ में कई लोगों की जान गई है। देश में पिछले दो दशक में दो दर्जन बार भगदड़ में करीब 1500 लोगों की जानें गई हैं, जबकि हजारों लोग घायल हुए हैं।

2025 को भगदड़ दुर्घटनाओं का साल कहा जाए तो गलत नहीं होगा। साल की शुरुआत 8 जनवरी, 2025

तिरुमाला हिल्स में भगवान वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में वैकुंठ द्वार दर्शनम के लिए टिकट लेने के लिए सैकड़ों श्रद्धालुओं के बीच हुई धक्का–मुक्की में छह श्रद्धालुओं की जान चली गई। दर्जनों लोग घायल हो गए।

महाकुंभ के दौरान 29 जनवरी को संगम क्षेत्र में भगदड़ मच गई। मौनी अमावस्या के अवसर पर लाखों तीर्थयात्री स्नान के लिए जगह पाने के लिए धक्का–मुक्की कर रहे थे। भगदड़ में 30 लोगों की मौत हो गई, 60 लोग घायल हो गए।

आईपीएल 2025 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की जीत के जश्न में बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर हादसा हो गया। विक्ट्री परेड शुरू होने से पहले अचानक भीड़ बेकाबू हो गई, जिससे भगदड़ मची। इस हादसे में 11 लोगों की जान चली गई और कम से कम 50 लोग घायल हुए।

15 फरवरी को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 14 और 15 पर भगदड़ मच गई। भगदड़ में 18 लोगों की जान चली गई, 15 घायल हो गए।

तीन मई को गोवा के शिरगाओ गांव में श्री लैराई देवी मंदिर के वार्षिक उत्सव के दौरान मची भगदड़ में 6 लोगों की मौत और करीब 100 लोग घायल हो गए।

इससे पहले 4 दिसंबर 2024 को हैदराबाद में अल्लू अर्जुन की ब्लॉकबस्टर 'पुष्पा 2' की स्क्रीनिंग के दौरान मची भगदड़ में 35 वर्षीय महिला की मौत हो गई। तीन जुलाई 2024 को उत्तर प्रदेश के हाथरस में स्वयंभू बाबा भोले बाबा उर्फ घ्घ्नारायण साकार हरि द्वारा आयोजित 'सत्संग' (प्रार्थना सभा) में भगदड़ से 121 लोगों की मौत हो गई.।

मध्य प्रदेश के इंदौर में एक मंदिर में 31 मार्च 2023 को रामनवमी के अवसर पर आयोजित 'हवन' समारोह के दौरान 'बावड़ी' या कुएं के ऊपर बनी स्लैब के ढह जाने से 36 लोगों की जान चली गई।

2022 के पहले दिन जम्मू–कश्मीर में माता वैष्णो देवी मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के कारण मची भगदड़ में 12 लोगों की मौत हो गई।

29 सितंबर 2017 को मुंबई में पश्चिमी रेलवे के एलफिंस्टन रोड स्टेशन को मध्य रेलवे के परेल स्टेशन से जोड़ने वाले पुल पर मची भगदड़ में 23 लोगों की मौत हो गई।

गोदावरी नदी के तट पर 14 जुलाई 2015 को हुई भगदड़ में 27 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई, 20 घायल हो गए। दशहरा समारोह 3 अक्टूबर 2014 को मेला समाप्त होने के तुरंत बाद पटना के गांधी मैदान में मची भगदड़ में 32 लोगों की मौत हो गई। इससे पहले 13 अक्तटूबर 2013 को मध्य प्रदेश के दतिया जिले में रतनगढ़ मंदिर के पास नवरात्रि उत्सव के दौरान भगदड़ में 115 लोगों की जान चली गई और 100 से अधिक घायल हो गए।

19 नवंबर, 2012 को पटना में गंगा नदी के किनारे अदालत घाट पर छठ पूजा के दौरान पुल के ढह जाने से मची भगदड़ में 20 लोग मारे गए। 8 नवंबर, 2011को हरिद्वार में गंगा नदी के किनारे घाट पर भगदड़ मचने से 20 लोग मारे गए थे।

14 जनवरी, 2011केरल के इडुक्की जिले के पुलमेडु में जीप के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से मची भगदड़ में 104 श्रद्धालु मारे गए, 40 से अधिक घायल हो गए।

4 मार्च, 2010 उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में कृपालु महाराज के राम जानकी मंदिर में भगदड़ में लगभग 63 लोग मारे गए। 30 सितंबर, 2008 राजस्थान के जोधपुर

में चामुंडा देवी मंदिर में बम विस्फोट की अफवाहों के कारण मची भगदड़ में 250 श्रद्धालु मारे गए, 60 से अधिक घायल हो गए। 3 अगस्त, 2008 हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले में नैना देवी मंदिर में चट्टान गिरने की अफवाह उड़ी, जिसमें 162 लोग मारे गए। 25 जनवरी, 2005 महाराष्ट्र के सतारा जिले में मंधारदेवी मंदिर मेंथा मे थे वार्षिक तीर्थयात्रा के दौरान 340 से अधिक श्रद्धालु कुचलकर मारे गए। 27 अगस्त, 2003 महाराष्ट्र के नासिक जिले में कुंभ मेले में स्नान के दौरान भगदड़ में 39 लोग मारे गए।

वास्तविकता यही है कि अपने देश में भीड़ नियंत्रण को लेकर ठोस रणनीति नहीं है और यही कारण है कि ऐसे हादसे होते ही रहते हैं। जरूरत है कि भगदड़ जैसी होने वाले त्रासदी को रोकने के लिए नई रणनीति के तहत काम किया जाए। साथ ही भीड़ एकत्र करने वाले आयोजन कर्ताओं की भी साफ एवं स्पष्ट जबावदेही तय की जाए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जा सके।

(विनायक फीचर्स)

गोकुल में एक मोर रहता था वह रोज़ भगवान कृष्ण के दरवाजे पर बैठकर एक भजन गाता था

"मेरा कोई ना सहारा बिना तेरे, गोपाल सांवरिया मेरे... और रोज आते–जाते भगवान के कानों में उसका भजन तो पड़ता था लेकिन कोई खास ध्यान न देते। मोर भगवान के विशेष स्नेह की आस में रोज भजन गाता रहा। एक–एक दिन करते एक साल बीत गया। मोर प्रतिदिन भजन गाता रहा। प्रभु सुनते भी रहे लेकिन कभी कोई खास तवज्जो नहीं दिया। बस वह मोर का गीत सुनते उसकी ओर एक नजर देखते और एक प्यारी सी मुस्कान देकर निकल जाते। इससे ज्यादा साल भर तक कुछ न हुआ तो उसकी आस टूटने लगी। साल भर की भक्ति पर भी प्रभु प्रसन्न न हुए तो मोर रोने लगा। वह भगवान को याद करते हुए जोर से रोने लगा कि उसी समय वहां से एक मैना उड रही थी। उसने मोर को रोता हुआ देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ. आश्चर्य इस बात का नहीं था कि कोई मोर रो रहा है अचंभा इसका था कि श्रीकृष्ण के दरवाजे पर भी कोई रो रहा है। मैना सोच रही थी कितना अभागा है यह मोर जो उस प्रभु के द्वार पर रो रहा है जहां सबके कष्ट अपने आप दूर हो जाते हैं। मैना मोर के पास आई और उससे पूछा कि तू क्यों रो रहा है? मोर ने बताया कि पिछले एक साल से बांसुरी वाले छलिये को रिझा रहा हूँ उनकी प्रशंसा में गीत गा रहा हूँ लेकिन उन्होंने आज तक मुझे पानी भी नही पिलाया। यह सुन मैना बोली– मैं बरसाने से आई हूं। तुम भी मेरे साथ वहीं चलो। वे दोनों उड़ चले और उड़ते–उड़ते बरसाने पहुंच गए। मैना बरसाने में राधाजी के दरवाजे पर पहुंची और उसने अपना गीत गाना शुरू किया।श्री राधे–राधे–राधे, बरसाने वाली राधे.. .मैना ने मोर से भी राधाजी का गीत गाने को कहा। मोर ने कोशिश तो की लेकिन उसे बांके बिहारी का भजन गाने की ही आदत थी। उसने बरसाने आकर भी अपना पुराना गीत गाना शुरू कर दिया– मेरा कोई ना सहारा बिना तेरे गोपाल सांवरिया मेरे...राधाजी के कानों में यह गीत पड़ा. वह भागकर मोर के पास आईं और उसे प्रेम से गले लगाकर दुलार किया। राधाजी मोर के साथ ऐसा बर्ताव कर रही थीं जैसे उनका कोई पुराना खोया हुआ परिजन वापस आ गया है। उसकी खातिरदारी की और पूछा कि तुम कहां से आए हो? मोर इससे गदगद हो गया। उसने कहना शुरू किया– जय हो राधा रानी आज तक सुना था कि आप करुणा की मूर्ति हैं लेकिन आज यह साबित हो गया। राधाजी ने मोर से पूछा कि वह उन्हें करुणामयी क्यों कह रहा है। मोर ने बताया कि कैसे वह सालभर श्याम नाम की धुन रमता रहा लेकिन कन्हैया ने उसे कभी पानी भी न पिलाया। राधाजी मुस्कराईं वह मोर के मन का टीस समझ गई थीं। राधाजी ने मोर से कहा कि तुम गोकुल जाओ लेकिन इस बार पुराने गीत की जगह यह गाओ– जय राधे राधे बरसाने वाली राधे...मोर का मन तो नहीं था करुणामयी को छोडकर जाने का फिर भी वह गोकुल आया राधाजी के कहे मुताबिक राधे–राधे गाने लगा। भगवान श्रीकृष्ण के कानों में यह भजन पड़ा और वह भागते हुए मोर के पास आए और उसे गले से लगा लिया और उसका हाल–चाल पूछने लगे। श्रीकृष्ण ने पूछा कि मोर तुम कहां से आए हो। इतना सुनते ही मोर भड़क गया। मोर बोला– वाह छलिये एक साल से मैं आपके नाम की धुन रम रहा था लेकिन आपने तो कभी पानी भी नहीं पूछा। आज जब मैंने दल बदला तो आप भागते चले आए। भगवान मुस्कुराने लगे उन्होंने मोर से फिर पूछा कि तुम कहां से आए हो। मोर सांवरिए से मिलने के लिए बहुत तरसा था। आज वह अपनी सारी शिकवा–शिकायतें दूर कर लेना चाहता था। उसने प्रभु को याद दिलाया– मैं वही मोर हूं जो पिछले एक साल से आपके द्वार पर "मेरा कोई ना सहारा बिना तेरे गोपाल सांवरिया मेरे...गाया करता था। सर्दी–गर्मी सब सहकर एक साल तक आपके द्वार पर पड़ा रहा। भगवान श्रीकृष्ण ने मोर से कहा– तुमने राधा का नाम लिया यह तुम्हारे लिए वरदान साबित हुआ। मैं वरदान देता हूं कि जब तक यह सृष्टि रहेगी तुम्हारा पंख सदैव मेरे शीश पर विराजमान होगा।

पुनि पुनि कहति हैं ब्रज नारी,
'धन्य बड़ भागिनी राधा तेरैं बस गिरिधारी

एक स्वर में बोले सारे पत्रकार, ब्रह्माकुमारीज़ ने हमें ज्ञान का प्रयोग करना सिखाया

राष्ट्रीय मीडिया कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों ने बांटे अनुभव

अनुभवों के आदान–प्रदान का अनूठा सत्र आयोजित

आबू रोड़। ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया विंग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय मीडिया कॉन्फ्रेंस में पत्रकारों ने अपने अनुभव बांटें। कॉन्फ्रेंस में अनुभवों के आदान–प्रदान का सत्र आयोजित किया गया। इस अनूठे सत्र में बहुत ही आत्मीय माहौल नज़र आया। देश भर से आये करीब डेढ़ हजार पत्रकारों ने मीडिया कॉन्फ्रेंस में शांति, एकता और विश्वास को समाज का स्थायी भाव बनाने को लेकर चर्चा की। सभी ने एक स्वर में यह माना कि ब्रह्माकुमारीज़ ने हमें ज्ञान का प्रयोग करना सिखाया। स्वर्ग देखना है तो ब्रह्माकुमारीज़ आकर देखो–कनुभाई आचार्य डिसा से आये राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ स्तम्भकार कनुभाई आचार्य ने कहा कि मुझे कॉन्फ्रेंस के पहले ही दिन पत्रकारों के लिए 'पत्रकार मनीषी' शब्द सुनकर बहुत आनंद हुआ। ब्रह्माकुमारीज़ हमें मनीषी होने का संकेत दे रही हैं। ज्ञान से पवित्र कुछ नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ ने हमें ज्ञान का प्रयोग करना सिखाया। जब मैं पहली बार यहां आया तो मेरे मन में आया स्वर्ग यहीं है। सतयुग का स्वर्ग देखना है तो ब्रह्माकुमारीज़ आकर देखो।

नेपाल में ब्रह्माकुमारीज़ के सेंटर पर लोगों ने शरण ली–सुरेंद्र सिंह डोंगरा, नेपाल

हिमालिनी पत्रिका के दिल्ली ब्यूरो चीफ नेपाल निवासी सुरेंद्र सिंह डोंगरा ने अनुभव सुनाते हुए कहा कि दो दशकों से अधिक समय से आता रहा हूँ। मैंने बहुत ही आनंद लिया। सब एक से एक वक्ताओं को सुना। ब्रह्माकुमारीज़ में पत्रकारों को आना ही चाहिए। कुछ बेहतर करने के लिए आपको ऑलराउंडर होना ही चाहिए। जब पूरी दुनिया की नज़र नेपाल में थी, तब पोखरा में ब्रह्माकुमारीज़ के सेंटर में कई लोगों ने शरण ली। यह संकेत देता है कि ब्रह्माकुमारीज़ ने शांति का संदेश दिया है कि वहां कोई आगजनी नहीं हुई। मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरा भी यहां आना होता है। 8 ज़ोन में नेपाल बंटा हुआ है। नेपाल में 78 ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर हैं।

जीवन में बैलेंस सीखना हो तो ब्रह्माकुमारीज़ आइये–विशाल यादव

रायपुर से आए जनमंत्र न्यूज़ के संपादक विशाल यादव ने कहा कि मैंने हमेशा फील्ड की पत्रकारिता की है। पिछले 12 सालों से मैं इस संस्था से जुड़ा तो कई सारे परिवर्तनों को महसूस करेंगे। पत्रकारों पर बहुत प्रेशर होता है तो वह बहुत जल्द रिएक्ट करते हैं, लेकिन जब हम ब्रह्माकुमारी बहनों की त्याग तपस्या देखते हैं तो हम सकरात्मक परिवर्तन महसूस करते हैं। जीवन में बैलेंस सीखना हो तो यहां आइये। ऐसे आयोजन केवल ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ही कर सकता है। ये संस्था जीवन जीने की कला सिखाती है।

43 वर्ष से ब्रह्माकुमारीज़ का मीडिया विंग मीडिया कॉन्फ्रेंस आयोजित कर रहा है–शशिकांत भाई

डिसा से आये वरिष्ठ पत्रकार बीके शशिकांत भाई ने कहा मैं 1978 में पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ आया। दादी प्रकाशमणि जी मुख्य प्रशासिका थीं। करुणा भाई ने हमें 3 महीने मीडिया की ट्रेनिंग दी थी। दादी जी ने कहा बहुत अच्छा कार्य कर रहे हो। समाज मे सकारात्मकता लाने पर समाज अच्छा होगा। ऐसा करके 1983 से 43 वर्ष से यहां मीडिया कॉन्फ्रेंस चल रही है। मेरे अभी तक 16 हजार आर्टिकल छप चुके हैं। इतने पत्रकार आये, मेडिटेशन किया और शांति को जीवन मे उतारा।

पत्रकार सत्य को सामने रखते हैं– गणेशदत्त जोशी

मीडिया विंग के एडिशनल जोनल कोऑर्डिनेटर गणेशदत्त जोशी ने कहा कि दुनिया डॉक्टर्स को नेक्स्ट टू गॉड कहते हैं लेकिन मैं "मीडिया प्रोफेशनल्स आर नेक्स्ट टू गॉड" कहता हूं क्योंकि वो सत्य को सामने रखते हैं। पत्रकार लेखनी द्वारा समाज को प्रभावित और प्रकाशित करता है।पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम जब डीआरडीओ में रहते ज्ञान सरोवर आये थे तो उन्होंने कहा था कि आज मुझे यह बात समझ में आई कि भारत ने किसी पर आक्रमण क्यों नहीं किया क्योंकि भारत में आध्यात्मिक शक्ति है, जो मुझे ब्रह्माकुमारीज़ में आकर समझ में आई।

अब आकर पछता रहा हूँ कि मैं ब्रह्मकुमारीज इतना लेट क्यों आया– प्रेम कुमार

बिहार श्रमजीवी पत्रकार संघ के महासचिव प्रेम कुमार ने कहा कि हम हर बार ब्रह्मकुमारीज का निमंत्रण मिलने पर सोचते थे कि ऐसे सम्मेलन होते रहते हैं, लोग जाते होंगे, लेकिन हमने आने का प्रयत्न नहीं किया। इस बार भी हम अनमने मन से आए थे। लेकिन अब आकर पछता रहा हूँ कि मैं इतना लेट क्यों आया। मुझे तो पहले आना चाहिए था। व्यक्ति जब सारे सिस्टम से हार जाता है तो उसे आखिरी में पत्रकार याद आते हैं। हम साधारण नहीं हैं। हमने जरूर कुछ अच्छे कर्म किए हैं, तब ही पत्रकार बने हैं। आप सब सत्य का साथ दीजिए। आज पांडव भवन जाकर ब्रह्मा बाबा की जीवन यात्रा देखी। उन्होंने जो सपना देखा, उसे हमें साकार करना है। यहां सब धर्मों के लोगों को देखा। सब एकमत हैं।

आप सबके लिए रोल मॉडल बने, यही हमारी शुभ इच्छा है – बीके सरला दीदी

सत्र की अध्यक्षता कर रहीं मीडिया विंग की उपाध्यक्ष बीके सरला दीदी ने कहा कि हमारा लक्ष्य व उद्देश्य यही है कि पत्रकार खुशी से रहे। मीडिया में कार्य बहुत तनावपूर्ण होता है। आपको भगवान की एक्स्ट्रा मदद चाहिए। आपके शब्द दुनिया में बदलाव लाने वाले हैं। भगवान की मदद से दुनिया में बदलाव लाया जा सकता है। हमने अपने एक्शन प्लान में जोर दिया कि अपनी कमजोरियों को राजयोग मेडिटेशन के आधार पर दूर करें। हमारी यही इच्छा है कि आप शांति के प्रतिरूप होकर यहां से निकले। यह ज्ञान गंगा का स्थान है।आप यहां कई जन्मों के लिए आप अपना भाग्य बनाते हो। आप सबके लिए रोल मॉडल बने, यही हमारी शुभ इच्छा है। सत्र में प्रतिभागियों ने भी बहुत उत्साह के साथ अपने अनुभव शेयर किए। कई पत्रकारों ने खुले सत्र में प्रश्न पूछकर मेडिटेशन संबंधी जिज्ञासा को भी शांत किया। अजमेर से आईं मीडिया विंग की सब जोनल कोऑर्डिनेटर बीके योगिनी दीदी ने सत्र का संचालन किया।

2026 में फिर मिलेंगे' के संकल्प के साथ

यूपी ट्रेड फेयर–3 सफलतापूर्वक संपन्न

राजेश बैरागी

ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में गत 25 सितंबर से चल रहे पांच दिवसीय उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले का आज शानदार समापन हो गया।अंतिम दिन सोमवार होने के बावजूद भारी भीड़ मेले में शिरकत करने पहुंची।इस आयोजन में 2,228 प्रदर्शक, 85 देशों से आए 525 अंतर्राष्ट्रीय खरीदार, 1,40,735 घरेलू बी2बी खरीदार और 3,66,364 बी2सी विजिटर शामिल हुए। 1,10,000 वर्ग मीटर का पूरा प्रदर्शनी क्षेत्र बुक हुआ और अतिरिक्त स्थान की भी व्यवस्था की गई। यूपीआइटीएस–2025 में रूस पार्टनर कंट्री रहा, जिससे आयोजन को विशेष महत्व मिला। 26 सितम्बर को आयोजित इंडिया रूस बिजनेस डायलॉग में 111 बी2बी मीटिंग्स हुईं, जिनमें 30 रूसी कंपनियों ने मैन्युफैक्चरिंग, ऊर्जा, अवसंरचना, एफएमसीजी, आईटी और डिजिटल सॉल्यूशंस, फार्मा, फूड प्रोसेसिंग, पर्यटन और पशुपालन क्षेत्रों में 90 भारतीय एमएसएमई व निर्यातकों से मुलाकात की। यह कॉन्क्लेव युवाओं को नवाचारी बिजनेस आइडिया प्रस्तुत करने का मंच बना। इसमें 113 स्टॉल लगे, जिनमें 49 फ्रैंचाइज ब्रांड, 64 मशीनरी सप्लायर और 26 बिजनेस ऑन व्हील्स शामिल रहे। 7,500 से अधिक रजिस्ट्रेशन, 8,300 बिजनेस इंक्वायरी और 2,000 से अधिक छात्रों की सक्रिय भागीदारी दर्ज की गई। यूपीआइटीएस–2025 के तीसरे संस्करण में लगभग ध्11,200 करोड़ की व्यावसायिक पूछताछ दर्ज हुई। आयोजन में सरकार, उद्योग, शिक्षा जगत और वैश्विक संस्थानों के बीच 2,400 से अधिक एमओयू पर हस्ताक्षर हुए, जिनकी कुल राशि ध्1,882 करोड़ रही।

पाँच दिवसीय यह शो इंडिया एक्सपो सेंटर में एक प्रभावशाली समापन सत्र के साथ संपन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता मुख्य अतिथि के रूप में माननीय केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने की। उन्होंने कहा कि ट्रेड शो की यह सफलता दूरदर्शी डबल इंजन सरकार के काम का सीधा प्रतिबिंब है। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के उद्योग व निर्यात मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी,एमएसएमई मंत्री राकेश सचान, पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के मा0 मंत्री नरेन्द्र कश्यप, अपर मुख्य सचिव, एम0एस0एम0ई0 और उद्योग आलोक कुमार, आयुक्त एवं निदेशक उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन विभाग के0 विजयेन्द्र पांडियन, एडिशनल आयुक्त उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन विभाग राजकमल यादव, जिलाधिकारी मेधा रूपम सहित प्रशासन व प्राधिकरण के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे। इंडिया एक्सपो मार्ट के चेयरमैन और सह–आयोजक, राकेश कुमार ने सामूहिक प्रयास की सराहना की और प्रदर्शकों को इवेंट की वास्तविक शक्ति बताया।

संस्कारों की बलि चढ़ी है

संस्कारों की बलि चढ़ी है
इच्छाओं का रौब बढ़ा है
अपने–अपने गीत अलापे
स्वार्थ भरे गीत ये अपने गाते

देख रहा हूँ समाज की हालत
संस्कृति पर गिरी क़यामत
गुरु के भाव छोड़ दिए हैं
गुरु भी आदर्श भूल गए हैं

इच्छा पाने की होड़ लगी है
मात–पिता तक छोड़ रहे हैं
समाज के हालात मैं क्यों गाऊँ
छोड़ समाज को कहाँ जाऊँ

निर्माण समाज का कौन करे हैं
गुरु–शिष्य परंपरा छोड़ चुके हैं
प्रौद्योगिकी की समाज पर पड़ी छाया
समाज लग गया इकट्ठी करने माया

मौलिक जीवन को ठोकर मारी
प्रौद्योगिकी की झपेट में दुनिया सारी
उपदेश सुनाये "शोधार्थी" खूब
दौलत के लालच में सुखा रहा है खून

–शोधार्थी, पुणे

भोजपुरी देवी पंचरा गीत
(सोरठी बृजभार धुन)

– सुना अब गुहार न हो

भगवती के दर्शन बहुत मनभावन लागे,
सफल करेली सब काज न हो ,
आहो माई।

श्मशान भूमिया लागे बहुत डरावन न हो,
मुर्दवा पर होलु काली तू खाड़ न हो,
आहो माई।

काटी के मुड़िया दइतवन गरवा पहिनलू तू,
भगतन के कईलू तू उद्धार न हो,
आहो माई।

एक हाथ धईलू माई खउलल ख़परवा हो,
दूजे हथ शोभेला कटार न हो,
आहो माई।

कैलाश के चोटिया बनवलु तू बसेरवा हो,
भोलेनाथ हउवे तोर भर्तार न हो,
आहो माई।

ब्रम्हाणी रूद्राणी कल्याणी धइलू तू भेषवा हो।
दुर्गा चंडी काली बनी पूजालु तू संसार न हो
आहो माई।

भगत भारती अइले बनी के पुजरिया हो,
फेरा तू नजरिया माई सुना मोर गुहार न हो
अहो माई।

गीतकार
श्याम कुंवर भारती(राजभर)
बोकारो,झारखंड

नवरात्रीचे दिवस की आप सबको मुबारक हो मुबारक हो मुबारक हो

आज बाप दादा का दिव्य संदेश आदरणीय गोदावरी दीदी

आज जैसे ही वतन मे जाना हुआ, तो बाबा के सामने सभी बच्चे थे! बाबा ने कहा अभी तक बच्चों को साकार?आकार?और निराकार क्या है? अभी तक बच्चो को क्लियर नही है!ऐसा कहकर बाबा ने कहा,अंदर मे ध्यान देना चाहिए!हम साकार मे है?आकार मे है?या निराकार मे है?इसलिये योगबल चाहिये! शिव बाबा निराकार,ब्रह्मा बाबा आकारी, बच्चे साकार मे तो बच्चों के बुद्धी मे ज्ञान हो,लेकिन अनुभव नही है!कि कैसे अब तक बुद्धीने क्लियर नही है,की हम देह नही! देही है! देही अभिमानी होंगे तब तिनो का अनुभव होगा! हम जो भी कार्य कर रहे है तो ध्यान मे रहे हम साकार मे होते,अंदर में आकार देह है!फिर निराकारी बन जाना है! यही मे क्लियर रहे, ऐसा सूचो!जीतना याद बाबा को करेंगे उतना आत्मिक स्वरूप याद रहेगा! अब समझो की हम भगवान के बच्चे है!तो क्या कमी हो सकती,माया नही आ सकती!लेकिन ये भूल जाने के कारण माया के अधीनं हो जाते! परंतु कितने अंदर में खुशी आनंद प्यार होना चाहिये! फिर बाबा भोग स्वीकार किया! और कहा अब साकार मे जादा नही रहना चाहिए! जब आकार मे पोचेंगे तब निराकारी स्थिती का भी अनुभव होगा अनतिम समय आ रहा है!तो अंतिम घडी की याद रहनी चाहिये! ऐसा कहते हुए सबको याद दी!और फिर कहा साकार मे आते है अंदर मे निराकारी स्वरूप की स्मृति रहे, तब उंच पर पा सकेंगे!ऐसा कहे हम सबको याद प्यार याद दी!!!द शांती ̆!!

पुरोहित(पुजारी) प्रशिक्षण शिविर

मुंबई – महाराष्ट्र कूर्मि क्षत्रिय महासभा (कोंकण विभाग)द्वारा 24 से 30अक्टूबर 2025 तक 7 दिवसीय पुरोहित (पुजारी)प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ग्लोबल स्कूल, मौजा –मेट, मेट पेट्रोल पंप के सामने, कुडूस अंबाड़ी रोड़, तालुका –वाड़ा, जिला–पालघर राज्य महाराष्ट्र पर आयोजित किया जा रहा है। आयोजक संजय पाटील (प्रदेश अध्यक्ष)एवं जयेश शेलार पाटील (महासचिव)ने बतलाया है कि महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में हर धार्मिक कार्यों हेतु पुरोहितों की आवश्यकता पड़ती है, परन्तु उपलब्धता कम रहती है स इसलिए ग्रामीण युवकों को धार्मिक विधि विधान सीखलाने हेतु पुरोहित (पुजारी) प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है स भविष्य में इस तरह के शिविर प्रदेश के सभी जिलों में आयोजित किये जायेंगे। इस शिविर में दमोह (म. प्र.)के विद्वान डॉ. रज्जन प्रसाद पटेल (पी एच डी –वैदिक वास्तु विज्ञानं एवं ज्योतिषचार्य) एवं बनारस के डॉ. हेमंत कौशिक (पंचकर्म एवं वैदिक विशेषज्ञ) सात दिनों तक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे स सभी प्रशिक्षुओं के आवास तथा भोजन की निशुल्क व्यवस्था महासभा के कोंकण विभाग के द्वारा की जायेगी। इस समापन कार्यक्रम के लिए पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एल पी पटेल , प्रदेश संरक्षक डॉ बाबूलाल सिंह , टाकेश्वर मठाधिपती योगी फुलनाथ महाराज उपस्थित रहेंगे. इस शिविर में हिस्सा लेने के इच्छुक तथा पुरोहित (पुजारी) बनने के लिये उत्सुक कूर्मि /कुणबी /पटेल नौजवान प्रदेश अध्यक्ष संजय पाटील (77450 48505) या महासचिव जयेश शेलार पाटील (7620256750) से संपर्क कर सकते हैं।

क्या भारत पाक क्रिकेट मैच ऑपरेशन सिंदूर का हिस्सा था?

क्या खेल का हारना जितना युद्ध के हारने जीतने जैसा ही है?

खुले दिल से सोचें कि क्या यदि हम मैच हार जाते तो ऑपरेशन सिंदूर फेल हो जाता?

सुरेन्द्र चतुर्वेदी

एशियन क्रिकेट कप में भारत ने पाकिस्तान को एक रोमांचक मैच में हरा दिया। निश्चित रूप से भारत के हर नागरिक के लिए यह सम्मान और गर्व की बात है।इसके लिए हमारे जां बाज़ खिलाड़ी बधाई के पात्र हैं।

......मगर दोस्तों! क्या क्रिकेट जैसे खेल को ऑपरेशन सिंदूर से जोड़े जाना चाहिएध्क्या खेल के और युद्ध के मैदान में कोई अंतर नहींध्क्या क्रिकेट का मैच भी ऑपरेशन सिंदूर का हिस्सा कहा जाना उचित है

ये वो सवाल हैं जो आज मैं अपने देशवासियों से पूछना चाहता हूँ। राष्ट्रीयता और देश भक्ति के ज़ज्बे को मेरा नमन है मगर मेरा यह निजी मानना है कि खेल भावना (स्पोर्ट्स मैन स्प्रीट) को किसी भी दृष्टि से युद्ध से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। युद्ध में हारना जितना किसी भी देश के लिए बहुत मानी रखता है मगर किसी कारण से खेल हार जाना उतना मानी नहीं रखता। हमने पाक को हरा कर कोई शक़ नहीं देश का सम्मान बचा लिया मगर कदाचित हम हार जाते तो क्या ऑपरेशन सिंदूर फेल हो जाता

खेल बनाम युद्ध ! जी इस उपमा की सीमा तो तय होनी ही चाहिए!

भारतदृपाक क्रिकेट मैच को 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसे सैन्य अभियान से जोड़ कर देखना तात्कालिक रोमांच तो पैदा करता है, पर यह खेल भावना और सामाजिक सौहार्दकृदोनों के लिए चुनौती है। खेल और युद्ध के बीच बुनियादी फर्क को समझना ही परिपक्व दृष्टिकोण है।

क्रिकेट का मर्म प्रतिस्पर्धा में गरिमा और आपसी सम्मान है। खिलाड़ी मैदान में देश का गौरव अवश्य बढ़ाते हैं, पर उनका लक्ष्य केवल बेहतर खेल दिखाना और खेल के नियमों में रहते हुए जीतना है।

इसके विपरीत युद्ध जीवन–मृत्यु का प्रश्न है, जिसमें हिंसा, विनाश और स्थायी वैरभाव निहित होता है। जब हम खेल को युद्ध की भाषा में ढालते हैं तो यह भेद धुंधला पड़ जाता है और खेल महज़ राष्ट्रवाद का युद्धक्षेत्र बन जाता है।घ्छ

ऐसी उपमाएँ खिलाड़ियों पर अनावश्यक दबाव डालती हैं। "देश के लिए दुश्मन को हराने" का बोझ उनकी स्वाभाविक प्रतिभा और आनंद को दबा देता है। साथ ही, सेना के असली बलिदान की गरिमा भी कम होती है। सैनिकों का संघर्ष और जोखिम किसी खेल की जीतदृहार से कहीं गहरा और गंभीर होता है।

राष्ट्रभावना और खेलदृउत्सव का आनंद लेना ग़लत नहीं है। लेकिन खेल को युद्ध का रूपक देने से न केवल खेल भावना को ठेस पहुँचती है, बल्कि दर्शकों में शत्रुता और कटुता का बीज भी पड़ता है। हमें याद रखना चाहिए कि खेल मैत्री का पुल है, खाई नहीं।

खेल को खेल ही रहने देंकृ जहाँ कौशल, रणनीति और आनंद की जीत हो। और युद्ध की उपमाएँ वहीं तक सीमित रहें, जहाँ उनका कठोर यथार्थ सचमुच मौजूद है। यही खेल और समाज दोनों के हित में है।

यहां एक और बात कहना चाहूंगा। भारतीय खिलाड़ियों ने पाक खिलाड़ियों से हाथ नहीं मिलाए या उनके पदाधिकारी से पुरस्कार नहीं लिए इस बात को मैं खेल भावना से नहीं जोड़ता। यह राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़ा मुद्दा है जिसे मैं खेल से कहीं ऊपर मानता हूं।

हो सकता है कट्टर राष्ट्रवादी मेरे विचारों से सहमत न हों और इसके लिए मैं तैयार भी हूं। विवाद के नाम पर विवाद करने वालों से मेरा कोई विवाद नहीं क्यों कि मैं जानता हूं उस पक्षी के बारे में जिसे सिर्फ़ रात में दिखाई देता है।

हो सकता है मैं इस विवाद में पडूं और लोग इसे भी ऑपरेशन सिंदूर से जोड़ दें। मैंने मेरा मंतव्य बता दिया अब मुद्दा पब्लिक के पाले में।

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।
सम्पादक
पूजा प्रसाद पाण्डेय
मो0– 9833567799
R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377
Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।

सोच अच्छी ख़बर सच्ची